दुआ

लेखक:
डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल क़ासिम
इमाम व ख़तीब मस्जिद ए नबवी शरीफ

दुआ

किताब डाउनलोड करने हेतु कोड को स्कैन करें

a-alqasim.com

दुआ

लेखक:

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद
अल क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद ए नबवी शरीफ

अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्रपालु है प्रस्तावना

समस्त प्रशंसाएं अल्लाह के लिए हैं जो सारे जग का पालनहार है, हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ, आपके वंश और आपके पदचिन्हों पर चलने वाले साथियों पर अत्याधिक सलाम व शांति हो।

अल्लाह ने मानव और जिन्न को अपनी इबादत के लिए पेदा किया है, और अल्लाह का अपनी मखलूक पर ये एहसान है कि उसने इबादत में विभिन्नता रखी है, अतः कुछ इबादतें दिल की होती हैं, जैसे: तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा करना) और अल्लाह का डर, और उनमें कुछ इबादतें बाहरी होती हैं जैसे: नमाज़ और ज़कात। इन इबादतों के बीच मूल और शुद्ध इबादत दुआ (प्रार्थना) है, धर्म में इसका मक़ाम बड़ा महान है, इसके मरतबे, उसके प्रोत्साहन और उसके शिष्टाचारों के बयान में बहुत सी बातें कुरान और हदीस में आई हैं।

दुआ एक ऐसी इबादत है जिससे परिस्थितियों और रैंकों में अंतर के बावजूद बंदे लापरवा नहीं हो सकते, और जो व्यक्ति अपनी दुआ में शुद्ध और नबी ﷺ की सुन्नत के अनुकूल होगा वो महान इबादत अदा करेगा और उसकी दुआ कबूल होने की आशा ज़्यादा होगी। और इस बारे में जिसका पाऊँ फिसल जाएगा और वो अल्लाह की प्रार्थना में कोताही करेगा या सीमा को फलाँगता होगया या फिर उसका मन अल्लाह के अलावा में अटक जाएगा तो वो महान इबादत का घाटा कर लेगा, उसे अपने मकसद

में नाकामी मिलेगी और वो अल्लाह की वाईद (अज़ाब) का शिकार होगा।

दुआ के महत्व और बंदों को इसकी आवश्यकता को सामने रखते हुए ही मेंने इस पुस्तक के अंदर कुछ विषयों को लिखा है जिनका आधार ये है की अकेले अल्लाह के सिवा किसी को ना पुकारा जाए, और इसका नाम मेंने "दुआ" (प्रार्थना) रखा है। वास्तव में ये पुस्तक एक भाषण थी जो मेंने २०/०२/१४४४ हिजरी को जुमे के दिन मस्जिदे नबवी में दिया था।

अल्लाह से प्रार्थना है की वो इसे अपने चेहरे के लिए खालिस और अपने बंदों के लिए लाभदायक बनाए।

हमारे पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ, आपके वंश और आपके पदचिन्हों पर चलने वाले साथियों पर अत्याधिक सलाम व शांति हो।

डॉक्टर अब्दुल मुहसिन बिन मोहम्मद अल क़ासिम

इमाम व ख़तीब मस्जिद ए नबवी शरीफ

मेंने इसे बीस सफर, वर्ष चोदा सो

चवालीस हिजरी को संपन्न किया।

काम को अल्लाह के लिए खालिस करना ही इस्लाम धर्म की हकीकत है

अल्लाह का धर्म जिसे उसने अगली पिछली सारी सृष्टि के लिए पसंद किया है, इस्लाम है। यह सभी नबियों द्वारा लाया गया, और सभी रसूलों ने इसका झंडा उठाया। अल्लाह फरमाता है:

﴿إِنَّ ٱلدِّينَ عِندَ ٱللَّهِ ٱلۡإِسۡلَٰمُۗ﴾

वास्तव में, अल्लाह के यहाँ धर्म इस्लाम ही है. (आले इमरान: १९)

और यह केवल अल्लाह के लिए अपने आप को खालिस कर लेने, और उसी को प्रभू, स्वामी, नियंत्रक, और एक मात्र पूज्य भगवान मान लेने का नाम है। और यही हनीफिय्यत (शुद्ध धर्म) और हमारे दादा इब्राहीम (उन पर शांति हो) का पंथ है, पवित्र वाणी है:

﴿ثُمَّ أَوۡحَيۡنَآ إِلَيۡكَ أَنِ ٱتَّبِعۡ مِلَّةَ إِبۡرَٰهِيمَ حَنِيفٗاۖ وَمَا كَانَ مِنَ ٱلۡمُشۡرِكِينَ﴾

फिर अब हमने तुम्हारी ओर प्रकाशना की कि "इबराहीम के तरीक़े पर चलो, जो बिलकुल एक ओर का हो गया था और बहुदेववादियों में से न था।" (अन-नहल: १२३)

और यह एक अक़ीदा (आस्था) और शरीअत (कानून) है, एक ज्ञान और कार्य है और एक भीतरी रूप को दर्शाने वाला बाहरी रूप है।

और कालिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" (अल्लाह के सिवा कोई

पूज्य नहीं) इस की जड़ और बुनयाद है, यही इसकी शुरुआत है और यही इसका अंत, यही इस का साधन है और यही इस का उद्देश्य, और यही इस दीन की इमारत का वो आलीशान गुंबद है जिससे इसकी आन बान और शान काएम है,

इस कलिमे के शब्द और अर्थ के बीच वही रिश्ता है जो एक आत्मा और शरीर के बीच होता है, जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर बेकार होता है वैसे ही इस कलिमे के अर्थ पर विश्वास किए बिना केवल उस को बोल देने से कोई लाभ नहीं होने वाला,

ये सारे दीन को अपने अंदर सामो लेने वाला कलिमा है, जो व्यक्ति इसके अर्थ को जानते हुए, उसके अनुसार काम करते हुए और उस के अधिकारों को पूरा करते हुए उस को बोलेगा तो वो तोहीद (एकीश्वरवाद) को स्थापित कर लेगा, और जिस ने तोहीद को उसी तरह स्थापित कर लिया जिस तरह अल्लाह ने अनिवार्य किया है वो बिना हिसाब और अज़ाब के जन्नत में प्रवेश करेगा।

इस्लाम धर्म सिर्फ अल्लाह से प्रार्थना करने पर आधारित है

बंदे की तरफ से तोहीद की सच्ची निशानी और सब से पक्का प्रमाड़ सब देवी देवताओं को छोड़ कर केवल एक अल्लाह को पुकारना ही है। नबी ﷺ का कथन है : "जब तुमको कुछ मांगना हो तो केवल अल्लाह से मांगो।" (तिरमिज़ी)(1)

इस्लाम धर्म केवल अल्लाह ही को पुकारने पर आधारित है, इसी संदेश के साथ अल्लाह ने अपने दूतों को भेजा और इसी पैगाम के साथ उसने अपने ग्रंथ उतारे, यही ईश्वर का वह दीन है जिसका प्रदर्शन वो अपने बंदों से चाहता है भले ही उस से मुंह मोड़ने वालों को अच्छा ना लगता हो, पवित्र कथन है:

﴿فَٱدۡعُواْ ٱللَّهَ مُخۡلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ وَلَوۡ كَرِهَ ٱلۡكَٰفِرُونَ﴾

अतः तुम अल्लाह ही को, धर्म को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए, पुकारो, यद्यपि इनकार करनेवालों को अप्रिय ही लगे। (अल-ग़ाफ़िर: १४)

और अल्लाह ने अपने नबी ﷺ को ये घोषणा करने का आदेश दिया है की उन का संदेश दुआ (प्रार्थना) में ऐकीश्वरवाद पर आधारित है। अल्लाह फ़रमाता है:

(1) संख्या (२५१६) इब्ने अब्बास (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) से

﴿قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوا۟ رَبِّى وَلَآ أُشْرِكُ بِهِۦٓ أَحَدًا﴾

कह दो, "मैं तो बस अपने रब ही को पुकारता हूँ, और उसके साथ किसी को साझी नहीं ठहराता।" (अल-जिन्न: २०)

सिर्फ अल्लाह से प्रार्थना करने से मुंह मोड़ने वाले की सज़ा

जो व्यक्ति घमंड में आकर अल्लाह को पुकारने से मुंह मोड़ेगा तो अल्लाह का उससे आग और अपमान का वादा है।

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسۡتَكۡبِرُونَ عَنۡ عِبَادَتِي سَيَدۡخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾

जो लोग मेरी बन्दगी के मामले में घमंड से काम लेते हैं निश्चय ही वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे। (अल-ग़ाफ़िर: ६०)

और जो व्यक्ति अल्लाह को पुकारने से नफ़रत करता हे और उस के मन को जीव जंतुओं को पुकारने से ही संतुष्टि मिलती है तो ये गुमराही और प्रलोक से लपरवाई की निशानी है, अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿وَإِذَا ذُكِرَ ٱللَّهُ وَحۡدَهُ ٱشۡمَأَزَّتۡ قُلُوبُ ٱلَّذِينَ لَا يُؤۡمِنُونَ بِٱلۡأٓخِرَةِ﴾

जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल भिंचने लगते हैं। (अज़-ज़ूमर: ४५)

अर्थात: उनके दिल नफरत से भर जाते और घमंडी हो जाते हैं और उनको केवल अल्लाह की पूजा और प्रार्थना स्वीकार नहीं होती।

दुआ ही इबादत है

ईमान (आस्था) की जो स्तिथि भी अल्लाह ने दिलों पर अनिवार्य की हें उन में दुआ (प्रार्थना) ज़रूर पाई जाती है, और इबादत (पूजा उपासना) के बाहरी और आंतरिक कार्य सभी अपने परिणाम और अर्थ में प्रार्थना ही हैं। जो कोई भी नमाज़ पढ़ता है, रोज़ा रखता है, हज करता है, या दान करता है; वह वास्तव में हाल की ज़बान से अपने रब को ही पुकारने वाला होता है, बंदे का रब की उपासना करना, उसके आगे झुक जाना और उस से प्रेम करना इस बात का ऐलान है की वो अपने रब से स्वीकृति और उस से करीब होने की चाहत रखता है। तो दुआ (प्रार्थना) ही इबादत (पूजा) है, वही पूजा का मस्तिष्क, उसका मूल और उसकी वास्तविकता है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया:" प्रार्थना (पुकारना) ही पूजा है", फिर आप ने ये आयत पढ़ी:

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدۡعُونِيٓ أَسۡتَجِبۡ لَكُمۡۚ﴾

तुम्हारे रब ने कहा है कि "तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार करूँगा।" (अल-ग़ाफ़िर: ६०) (मुसनद अहमद)[1]

(1) संख्या (१८४३२), नूमान बिन बशीर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस

सिर्फ अल्लाह को पुकारने का महत्व

प्रार्थना की महानता और उसके उच्च स्तर के कारण ही अल्लाह ने अपनी पवित्र किताब का आग़ाज़ भी प्रार्थना से किया है:

﴿ٱهْدِنَا ٱلصِّرَٰطَ ٱلْمُسْتَقِيمَ﴾

ऐ अल्लाह हमें सीधे मार्ग पर चला। (अल-फातिहा:६)

और उस का अंत भी "मुअव्विज़तेन"(1) नामी दो सूरतों से किया है जिन में प्रार्थना मोजूद है, बल्कि अल्लाह ने दुआ (प्रार्थना) का नाम ही दीन (धर्म) रख दिया, पवित्र वाणी है:

﴿فَٱدْعُوا۟ ٱللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ﴾

अतः तुम अल्लाह ही को, धर्म (प्रार्थना) को उसी के लिए विशुद्ध करते हुए, पुकारो। (अल-ग़ाफ़िर: १४)

इसी प्रकार प्रार्थना का नाम इबादत (पूजा) भी रखा:

﴿وَقَالَ رَبُّكُمُ ٱدْعُونِىٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ ٱلَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِى سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ﴾

तुम्हारे रब ने कहा है कि "तुम मुझे पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थनाएँ स्वीकार

(1) अर्थात: अल्लाह की पनाह दिलाने वाली दो सूरतें

करूँगा।" जो लोग मेरी इबादत (प्रार्थना) के मामले में घमंड से काम लेते हैं निश्चय ही वे शीघ्र ही अपमानित होकर जहन्नम में प्रवेश करेंगे। (अल-ग़ाफ़िर: ६०)

सिर्फ अल्लाह को पुकारना ईमान की निशानी है

दुआ में सिर्फ अल्लाह के लिए इखलास (प्रार्थना को अल्लाह के प्रति शुद्ध करना) ईमान की निशानी, यकीन का प्रमाण, मोक्ष की रस्सी, विजय और सफलता का साधन है। दुआ नबियों और मोमिनों की पहचान है, अतः दुआ करने वाला और दुआ में अपने रब की तोहीद को अपनाने वाला (अर्थात सिर्फ अल्लाह को पुकारने वाला) ही सच्चा भक्त और सर्वोत्तम सत्यता के मार्ग पर चलने वाला है, क्योंकि दुआ ही वो मजबूत स्तंभ है जिसका सहारा मुसलमान लेते हें, वही शांतिपूर्ण पनाह गाह जहां जरूरतमन्द पनाह लेते हैं। और कठिन प्रस्तिथियाँ बंदे को रब से मिलवाती और उस का हाथ पकड़ कर उसे दुआ (प्रार्थना) मे ऐकीश्वरवास की तरफ ले जाती हैं, अल्लाह फरमाता है:

﴿وَإِذَا مَسَّ ٱلْإِنسَٰنَ ٱلضُّرُّ دَعَانَا لِجَنۢبِهِۦٓ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَآئِمًا﴾

मनुष्य को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है, तो वह लेटे या बैठे या खड़े हमको पुकारने लग जाता है। (यूनुस: १२)

अकेला अल्लाह ही दुआओं को सुन्ने वाला है

हमारा पाक पालनहार ही हर समय और हर स्तिथि मे पुकारा जाएगा, क्योंकि वही सृष्टिकर्ता है जो किसी भी चीज़ से असमर्थ नहीं, वो सक्षम और सर्वशक्तिमान है, हर चीज़ से ऊपर है, रोजी रोटी उसी के हाथ मे है, मिलना और ना मिलना उसी की तरफ से है, पूर्णता, सुंदरता और महिमा जेसे सत्यता के गुण उस से अलग नहीं हो सकते,

और जो कोई उसे उसके नाम और गुणों से पुकारेगा, वह उसे उस की चाही वस्तु प्रदान करेगा

﴿وَلِلَّهِ ٱلۡأَسۡمَآءُ ٱلۡحُسۡنَىٰ فَٱدۡعُوهُ بِهَاۖ﴾

सबसे अच्छे नाम अल्लाह ही के हैं। तो तुम उन्हीं के द्वारा उसे पुकारो। (अल-आराफ़: १८०)

हमारा पालनहार ही अपने भिक्षकों और भक्तों से करीब है, जो कोई अपनी जरूरत उसके आगे रखता है वो उसे पूरा कर देता है, जो उससे माँगता है वो उसे प्रदान करता है और जो उसके दर का फ़कीर बन जाता है वो उसे धनी कर देता है।

﴿وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِي عَنِّي فَإِنِّي قَرِيبٌۖ أُجِيبُ دَعۡوَةَ ٱلدَّاعِ إِذَا دَعَانِۖ﴾

और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे सम्बन्ध में पूछें, तो मैं तो निकट ही हूँ, पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जब वह मुझे पुकारता है। (अल-

बकाराः १८०)

वह जीवन्त और सबको सँभालने और क़ायम रखनेवाला है। जो उसे पुकारता है, वह एक ऐसे निरपेक्ष, सर्वाधार प्रभु की ओर मुड़ता है, जो दुखों को दूर करने में सक्षम है,

﴿هُوَ ٱلْحَىُّ لَآ إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَٱدْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ ٱلدِّينَ﴾

वह जीवन्त है। उसके सिवा कोई पूज्य–प्रभु नहीं। अतःधर्म को उसी के लिए विशुद्ध करके उसी को पुकारो। (अल-ग़ाफ़िर: ६५)

सिर्फ अल्लाह का ही दुआ पर अधिकार होना इस बात का प्रमाण है कि वही हक़ (सत्य) है और उस के सिवा किसी और से की गई दुआ उत्तर नहीं पा सकती। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿لَهُۥ دَعْوَةُ ٱلْحَقِّ وَٱلَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُم بِشَىْءٍ﴾

उसी के लिए सच्ची पुकार है। उससे हटकर जिनको वे पुकारते हैं, वे उनकी पुकार का कुछ भी उत्तर नहीं देते (अल-रअद: १४)

उसकी उदारता मन को हेरान कर देती है और उसका करम बहुत ही अजीब है, छोटी सी नेकी का बदला बहुत अधिक वरदानों से देता है, जो उसका गुणगान करता है और उस से अच्छी तरह माँगता है वो उसे बहुत ज्यादा नवाज़त है और जिस का धर्म और तोहीद ठीक हो और वो अल्लाह के साथ किसी को साझी न बनाता हो तो उसके बड़े बड़े गुनाह भी माफ

फ़रमा देता है। अल्लाह तआला क़ुद्सी हदीस [1]में फरमाता है: "जो व्यक्ति मेरे पास धरती भर कर भी पाप लेकर आएगा और उस ने मेरे साथ किसी को साझी नहीं बनाया होगा तो मे उन पापों के बराबर छमा के साथ उससे मिलुंगा।" (सही मुस्लिम)[2]

(1) क़ुद्सी हदीस वो हदीस कहलाती जिस में नबी ﷺ अल्लाह की तरफ से कुरान के अलावा कोई बात बताते हैं।

(2) संख्या (२६८७) अबुज़र (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस।

सारे नबी अकेले अल्लाह को पुकारते थे

अल्लाह का सब से चहेता बंदा वो है जो उससे सब से ज़्यादा माँगता है और माँगता ही रहता है, बंदे के पास ईमान और दीन की समझ जितनी ज़्यादा होगी और उस का रब से संबंध जितना मजबूत होगा हर प्रस्तिथि में अल्लाह से मांगने की चाह भी उसके यहाँ उतनी ही ज़्यादा होगी। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया: "तुम में से हर व्यक्ति अपनी हर जरूरत की चीज़ अपने रब से ही माँगनी चाहिए , यहां तक की चप्पल की बद्धी भी अगर टूट जाए तो वो भी।" (तिरमिज़ी) [1] इमाम इब्ने तेमिय्या केहते हैं: "हर नबी और उनके अनुयायी हमेशा से अल्लाह से अपने दीन, दुन्या और आखिरत की भलाइयाँ मांगते आए हैं, भला अल्लाह के आगे हाथ फेलाने से कोन वंचित रेह सकता है जबकि बंदे की विशेषता ही दुआ करना हो और रब की विशेषता उसका उत्तर देना ? तो जो कोई ये भ्रम पालता है की उसे अल्लाह के आगे हाथ फेलाने की आवश्यकता नहीं है वो भक्ति के पट्टे से निकल गया। अर्थात वो दीन से दूर हो गया।"[2]

अल्लाह के नबियों का ये तरीक़ा रहा है की वो हर प्रस्तिथि में अल्लाह से अधिक से अधिक दुआ करते थे। पवित्र वाणी है:

---

(1) संख्या (८-३६०४) अनस बिन मालिक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस।

(2) अल-रद्द अला अश्शाज़िली (५७)।

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا۟ يُسَٰرِعُونَ فِى ٱلْخَيْرَٰتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَرَهَبًا ۖ وَكَانُوا۟ لَنَا خَٰشِعِينَ﴾

निश्चय ही वे नेकी के कामों में एक–दूसरे के मुक़ाबले में जल्दी करते थे। और हमें ईप्सा (चाह) और भय के साथ पुकारते थे और हमारे आगे दबे रहते थे। (अल-अंबिया: ९०)

ज़कारिय्या (उन पर सलाम हो) का दिल लड़के से जुड़ा हुआ था, इसलिए उन्होंने अपने रब से अच्छी संतान की दुआ की और अपने रब का गुणगान किया और कहा:

﴿إِنَّكَ سَمِيعُ ٱلدُّعَآءِ﴾

"तू ही प्रार्थना को सुननेवाला है" (आले इमरान: ३८)

फिर जब वो अपनी मेहराब (इबादत के स्थान) की तरफ उठे, तो देखते हैं की फरिशते उनको बुढ़ापे और हड्डियों की कमजोरी के बावजूद उनकी नस्ल से एक नबी की खुशखबरी दे रहे हैं। नूह (उन पर सलाम हो) के लोगों ने अवज्ञा और इनकार के साथ अपने पैगंबर का सामना किया

﴿فَدَعَا رَبَّهُۥٓ أَنِّى مَغْلُوبٌ فَٱنتَصِرْ﴾

तो उन्होंने अपने रब को पुकारा कि "मैं दबा हुआ हूँ। अब तू बदला ले। (अल-क़मर :१०)

इसलिए अल्लाह ने मोमिनों के सिवा धरती पर मोजूद सभी लोगों को एक महान जलप्रलय में डुबो दिया।

और अल्लाह ने गुफा के साथियों की कहानी बताई है कि वे युवा एकेश्वरवादी थे जो जानते थे कि ईश्वर की प्रार्थना ही वह धर्म है जिसके अतिरिक्त ईश्वर कुछ स्वीकार नहीं करता है, इसलिए वे अपने लोगों के बीच खड़े हो गए और कहा:

﴿رَبُّنَا رَبُّ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضِ لَن نَّدۡعُوَاْ مِن دُونِهِۦٓ إِلَٰهٗاۖ لَّقَدۡ قُلۡنَآ إِذٗا شَطَطًا﴾

"हमारा रब तो वही है जो आकाशों और धरती का रब है। हम उससे हटकर किसी अन्य पूज्य को कदापि न पुकारेंगे। यदि हमने ऐसा किया तब तो हमारी बात हक़ से बहुत हटी हुई होगी।" (अल-कह्फ़: १४)

और दुआ मोमिनों का सुबह शाम और भोर का जाप है:

﴿تَتَجَافَىٰ جُنُوبُهُمۡ عَنِ ٱلۡمَضَاجِعِ يَدۡعُونَ رَبَّهُمۡ خَوۡفٗا وَطَمَعٗا وَمِمَّا رَزَقۡنَٰهُمۡ يُنفِقُونَ﴾

उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वे अपने रब को भय और लालसा के साथ पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं। (अस-सजदा: १६)

रब से ज़्यादा प्रार्थना करने वालों और नेकी में इखलास वालों के

साथ बेठना उन उच्च कार्यों मे से है जिन का आदेश अल्लाह ने अपने नबी को दिया है:

﴿وَٱصۡبِرۡ نَفۡسَكَ مَعَ ٱلَّذِينَ يَدۡعُونَ رَبَّهُم بِٱلۡغَدَوٰةِ وَٱلۡعَشِيِّ يُرِيدُونَ وَجۡهَهُۥ﴾

अपने आपको उन लोगों के साथ थाम रखो, जो प्रातःकाल और सायंकाल अपने रब को उसकी प्रसन्नता चाहते हुए पुकारते हैं। (अल-कह्फ़: २८)

अकेले अल्लाह को पुकारने के लाभ

दुआ का लाभ महान है और उसके फायेदे अनेक हैं, इससे जीवित और मृत सभी का भला होता है, इसकी बरकत दुआ करने वाले और जिस के लिए दुआ की जा रही है दोनों को मिलती है, ये अन्य साधनों की तरह ही एक प्रभावशाली साधन है, बंदा अल्लाह की तक़दीर से ही अपने रब को पुकारता है और उसीकी इच्छा अनुसार उसकी पुकार का जवाब दिया जाता है, अत: दुआ बला को टाल देती है (अगर अल्लाह के ज्ञान में वो पेहले से होती है तो), भलाई को लाती है और अल्लाह की आज्ञा से तबाही से मुक्ति दिलाती है। तो सारा मामला अल्लाह पर निर्भर है, किसी जीव जन्तु को उस पर कोई अधिकार नहीं।

अल्लाह की शुद्ध प्रार्थना एक चमकदार रोशनी है जो अल्लाह के सिवा न तो प्रतिद्वंद्वी को छोड़ती है, न ही विपरीत, साझी, सहायक, मूर्ति या किसी भगवान को, इस के माध्यम से दुआ करने वाला अपने रब का बंदा बन जाता है, इसलिए वह उसे इरादे, महिमा, प्रेम, भय और आशा के साथ (दूसरों से) अलग करता है, और दिल समृद्धि और विपत्तियों के दौरान उससे चिपक जाता है, और ज़बान समृद्धि और विपत्तियों में उसकी प्रार्थना का जाप करती है।

एकेश्वरवादी व्यक्ति की कुछ निशानियाँ

अगर कोई अपने एकेश्वरवाद के बारे में सच्चाई जानना चाहता है, तो उसे देखना चाहिए कि वो किससे प्रार्थना करता है ? जो कोई ईमानदारी से ईश्वर से प्रार्थना करता है, उसने एकेश्वरवाद को प्राप्त कर लिया है, और जो ईश्वर के अलावा अन्य से प्रार्थना करता है, वह बहुदेववाद में गिर जाता है। सर्वशक्तिमान ने कहा:

﴿وَمَن يَدۡعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ لَا بُرۡهَٰنَ لَهُۥ بِهِۦ فَإِنَّمَا حِسَابُهُۥ عِندَ رَبِّهِۦٓۚ إِنَّهُۥ لَا يُفۡلِحُ ٱلۡكَٰفِرُونَ﴾

और जो कोई अल्लाह के साथ किसी दूसरे पूज्य को पुकारे, जिसके लिए उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके रब के पास है। निश्चय ही इनकार करनेवाले कभी सफल नहीं होंगे। (अल-मूमिनून: ११७)

रसूलों ने किसी से नहीं कहा कि वो उन्हें पुकारें

पूर्णता और महिमा केवल अल्लाह के लिए है, और पूजा केवल अल्लाह के योग्य है, और उसकी महानता के अलावा देवत्व के योग्य कुछ नहीं है, कोई भी मनुष्य चाहे वो कितना ही ऊंचा हो, अल्लाह के सिवा थोड़ा बहुत भी पुकारे जाने का अधिकार नहीं रखता, भला जो कोई इस ब्रह्मांड में एक छोटा सा प्राणी बनाने में असमर्थ है; पूजा और प्रार्थना में उसका कोई हिस्सा केसे हो सकता है? अल्लाह फरमाता है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ لَن يَخۡلُقُواْ ذُبَابٗا وَلَوِ ٱجۡتَمَعُواْ لَهُۥ﴾

(अल्लाह से हटकर तुम जिन्हें पुकारते हो वे एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। यद्यपि इसके लिए वे सब इकट्ठे हो जाएं। (अल-हज्ज: ७३)

और अल्लाह ने अपनी सृष्टि में से रसूलों को चुना और उन्हें दूसरों पर पसंद किया, और उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसने ने अल्लाह के प्रभुत्व में उसका विरोध किया हो, या लोगों को अपनी वंदना करने की आज्ञा दी हो या उससे प्रसन्न हुए हों।

﴿وَإِذۡ قَالَ ٱللَّهُ يَٰعِيسَى ٱبۡنَ مَرۡيَمَ ءَأَنتَ قُلۡتَ لِلنَّاسِ ٱتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَٰهَيۡنِ مِن دُونِ ٱللَّهِۖ قَالَ سُبۡحَٰنَكَ مَا يَكُونُ لِيٓ أَنۡ أَقُولَ مَا لَيۡسَ لِي بِحَقٍّ﴾

और याद करो जब अल्लाह कहेगा, "ऐ मरयम के बेटे ईसा! क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह के अतिरिक्त दो और पूज्य मुझे और

मेरी माँ को बना लो?" वह कहेगा, "महिमावान है तू! मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं यह बात कहूँ, जिसका मुझे कोई हक़ नहीं है। (अल-माइदा: ११६)

वे बीमारी और कमजोरी से ग्रस्त हुए; उनमें से कुछ मारे गए, कुछ बीमार हुए और कुछ जादू टोने का शिकार भी हुए, वे सब मनुष्य थे और खाते-पीते थे, भला जो अपनी कमर सीधी करने के लिए खान-पान का मोहताज हो वो भगवान केसे हो सकता है? बल्कि, सृष्टि में सबसे अच्छे हमारे पैगंबर मुहम्मद ﷺ के दांत तोड़े गए,(1) आपके सर को ज़ख्मी किया गया और आप घोड़े से भी गिरे, जिसके कारण आप का पहलू छिल गया और आपने बेठ कर नमाज़ पड़ी।(2)

(1) सही बुखारी, संख्या (२९११), सही मुस्लिम, (१७९०) सह्ल बिन साद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस।
(2) सही बुखारी, संख्या (६८९), सही मुस्लिम, (४११) अनस बिन मालिक (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस।

धरती पर होने वाला सब से बड़ा पाप अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारना है

अल्लाह के अलावा किसी और के लिए प्रार्थना एक महान पाप है, सर्वशक्तिमान ने अपने पैगंबर से कहा:

﴿وَلَا تَدۡعُ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَنفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَۖ

فَإِن فَعَلۡتَ فَإِنَّكَ إِذٗا مِّنَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾

(और अल्लाह से हटकर उसे न पुकारो जो न तुम्हें लाभ पहुँचाए और न तुम्हें हानि पहुँचा सके और न तुम्हारा बुरा कर सके, क्योंकि यदि तुमने ऐसा किया तो उस समय तुम अत्याचारी होगे।) (यूनुस: १०७)

और सबसे बड़ा पाप अल्लाह और उसकी सृष्टि के बीच मध्यस्थ बनाना है। इमाम इब्ने तेमिय्या (उन पर अल्लाह की रहमत हो) केहते हैं: किसी भी नबी ने सृष्टि के लिए अधिनियमित नहीं किया कि वह मरे हुए नेक लोगों, अनुपस्थितों, और फरिश्तों से दुआ या सिफारिश करने के लिए कहें। बल्कि यही शिर्क (बहुदेववाद) की जड़ है, कियोंकि मुशरिकों (बहुदेववादियों) ने उनको सिफारिशी ही बनाया था, अल्लाह फरमाता है:

﴿وَيَعۡبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمۡ وَلَا يَنفَعُهُمۡ وَيَقُولُونَ هَٰٓؤُلَآءِ

شُفَعَٰٓؤُنَا عِندَ ٱللَّهِۚ﴾

वे लोग अल्लाह से हटकर उनको पूजते हैं, जो न उनका कुछ बिगाड़

सकें और न उनका कुछ भला कर सकें। और वे कहते हैं, "ये अल्लाह के यहाँ हमारे सिफ़ारिशी हैं।" (यूनुस: १८)[1]

और पृथ्वी पर सबसे बड़ा पाप अल्लाह के साथ किसी और से प्रार्थना करना है, इब्ने मसूद (अल्लाह उन से राज़ी हो) फरमाते हैं: "मैंने कहा: हे अल्लाह के रसूल, कौन सा पाप सब से बड़ा है? आपने कहा: ये कि तुम किसी को अल्लाह का समकक्ष मानो जबकि तुमको उसीने पैदा किया है।" (सही बुखारी वे सही मुस्लिम)[2]

अल्लाह ने अपने साथ किसी अन्य को पुकारने वाले को अज़ाब की वाईद सुनाई है, अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿فَلَا تَدۡعُ مَعَ ٱللَّهِ إِلَٰهًا ءَاخَرَ فَتَكُونَ مِنَ ٱلۡمُعَذَّبِينَ﴾

अतः अल्लाह के साथ दूसरे इष्ट-पूज्य को न पुकारना, अन्यथा तुम्हें भी यातना दी जाएगी। (अश-शुअरा: २१३)

(आयत की तफ़सीर में) इब्ने अब्बास (अल्लाह उन से प्रसन्न हो) फरमाते हैं: इस के माध्यम से अल्लाह दूसरों को सचेत कर रहा है और (अपने नबी से) केह रहा है: "तुम मेरे यहाँ सबसे अज़ीज़ हस्ती हो, उसके बावजूद यदि तुम भी मेरे अलावा किसी और को पूज्य मानोगे तो में तुम को

(1) काइदा अज़ीमा (१/१२१)।

(2) सही बुखारी, संख्या (४४७७), सही मुस्लिम, (८६)।

भी यातना दुंगा"।[1]

नमाज़, रुकू और सजदे को नियमित किए जाने और अल्लाह की धरती पर मस्जिद के निर्माण का उद्देश्य केवल यही है की सिर्फ उसीसे प्रार्थना की जाए और किसी और को बिल्कुल भी ना पुकार जाए, अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿وَأَنَّ ٱلْمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا۟ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدًا﴾

(और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं। अतः अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। (अल-जिन्न: १८)

(1) तफ़सीर बग़वी (३/४८०)।

मुर्दे पुकारने वालों को नहीं सुनते

पुकारने वाला सृष्टिकर्ता को पुकारता है, अपने जैसे प्राणी को नहीं, वो उस से मदद नहीं माँगता जो उसीकी तरह अल्लाह के बंदे हैं, अल्लाह पाक फरमाता है:

﴿إِنَّ ٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ عِبَادٌ أَمۡثَالُكُمۡۖ فَٱدۡعُوهُمۡ فَلۡيَسۡتَجِيبُواْ لَكُمۡ إِن كُنتُمۡ صَٰدِقِينَ﴾

तुम अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पुकारते हो वे तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं, अतः पुकार लो उनको, यदि तुम सच्चे हो, तो उन्हें चाहिए कि वे तुम्हें उत्तर दें! (अल-आराफ़: १९६)

और कब्र वाला अपने पुकारने वाले को नहीं सुनता, भले ही वह उसे रब के मक़ाम पर ले जाए, और कब्र वाले के पास, मदद माँगने वाले को देने के लिए कुछ भी नहीं होता भले ही वह उसमें ईश्वर की विशेषताओं का दावा करता हो:

﴿وَٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ مَا يَمۡلِكُونَ مِن قِطۡمِيرٍ * إِن تَدۡعُوهُمۡ لَا يَسۡمَعُواْ دُعَآءَكُمۡ وَلَوۡ سَمِعُواْ مَا ٱسۡتَجَابُواْ لَكُمۡ﴾

अल्लाह से हटकर जिनको तुम पुकारते हो वे एक तिनके के भी मालिक नहीं। यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार सुनेंगे ही नहीं।

और यदि वे सुनते तो भी तुम्हारी याचना स्वीकार न कर सकते। (फातिर: १३-१४)

क़ितमीर अर्थात: खजूर और उसकी गुठली के बीच की झिल्ली।

म्रत संव्य की मदद नहीं कर सकते तो दूसरों की मदद करना तो असंभव ही है, अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿وَٱلَّذِينَ تَدۡعُونَ مِن دُونِهِۦ لَا يَسۡتَطِيعُونَ نَصۡرَكُمۡ

وَلَآ أَنفُسَهُمۡ يَنصُرُونَ﴾

रहे वे जिन्हें तुम उसको छोड़कर पुकारते हो, वे न तो तुम्हारी सहायता करने का सामर्थ्य रखते हैं और न स्वयं अपनी ही सहायता कर सकते हैं। (अल-आराफ़: १९७)

मुर्दे को पुकारने वाला जानता है कि वो सुन नहीं सकता और लाभ भी नहीं दे सकता

यह भी तथ्य है की अल्लाह के अतिरिक्त को पुकारने वाले को इस बात का यकीन होता है की जिस को वो पुकार रहा है वो ना तो सुन सकता है और ना कुछ लाभ ही दे सकता है, इब्राहीम (उन पर शांति हो) ने अपनी कोम से उन की मूर्तियों के बारे में कहा था:

﴿....هَلۡ يَسۡمَعُونَكُمۡ إِذۡ تَدۡعُونَ ۞ أَوۡ يَنفَعُونَكُمۡ أَوۡ يَضُرُّونَ ۞
قَالُواْ بَلۡ وَجَدۡنَآ ءَابَآءَنَا كَذَٰلِكَ يَفۡعَلُونَ﴾

"क्या ये तुम्हारी सुनते हैं, जब तुम पुकारते हो, या ये तुम्हें कुछ लाभ या हानि पहुँचाते हैं?" उन्होंने कहा, "नहीं, बल्कि हमने तो अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है।" (अश-शुअरा: ७२-७४)

इमाम इब्ने कसीर (अल्लाह की रहमत हो उन पर) ने कहा: "आयत का मतलब ये है की उन्होंने मान लिया था की उनके बुत कुछ भी नहीं कर सकते, बल्कि उन्होंने बाप-दादा को ऐसा ही करते देखा है।"(1)

---

(1) तफ़सीर इब्ने कसीर (६/१४६)।

मुर्दे को पुकारने से थकान और धर्म भ्रष्ट होने के सिवा कुछ नहीं मिलता

जो कोई लाभ पाने या हानि से बचने की आशा में मरे हुओं को पुकारता है; उसे धर्म की भ्रष्टी के साथ थकान के सिवा कुछ हासिल नहीं हो सकता।

﴿يَدْعُوا۟ مِن دُونِ ٱللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُۥ وَمَا لَا يَنفَعُهُۥ ذَٰلِكَ هُوَ ٱلضَّلَٰلُ ٱلْبَعِيدُ يَدْعُوا۟ لَمَن ضَرُّهُۥٓ أَقْرَبُ مِن نَّفْعِهِۦ لَبِئْسَ ٱلْمَوْلَىٰ وَلَبِئْسَ ٱلْعَشِيرُ﴾

वह अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारता है, जो न उसे हानि पहुँचा सके और न उसे लाभ पहुँचा सके। यही है परले दर्जे की गुमराही। वह उसको पुकारता है जिससे पहुँचनेवाली हानि उससे अपेक्षित लाभ की अपेक्षा अधिक निकट है। बहुत ही बुरा संरक्षक है वह और बहुत ही बुरा साथी (अल-हज्ज: १२-१३)

पुकारने वाला अगर किसी और तरफ का रुख करता है तो इसका मतलब ये है की वो आत्मसम्मान को खो रहा है और खुद को अपमानित कर रहा है। इमाम अहमद (अल्लाह की रहमत हो उन पर) ने कहा: ऐ अल्लाह जिस प्रकार तूने मेरे चेहरे को किसीके आगे माथा टेकने से बचाया है इसी प्रकार उसको अपने सिवा किसी से मांगने से भी बचा, हानी को दूर करने और लाभ पोहंचाने पर तेरे सिवा कोई समर्थ नहीं है" (1)।

---

(1) जामिउल-उलूम वल-हिकम (१/४८१)।

जो किसी मुसीबत में अल्लाह के सिवा किसी को पुकारता है अल्लाह उसे उससे सख्त मुसीबत में डालता है

कोई भी बंदा जो अल्लाह के अलावा किसी और से प्रार्थना करता हो, या जिसका दिल किसी और की ओर हो, या जिसे शैतान ने फुसफुसाया हो कि वह अपने रब के अलावा किसी और से जुड़ जाए, वह ऐसी कठिनाई और पीड़ा से आवश्यक पीड़ित होगा, जो उसे जिस से उसने प्रार्थना की है उसकी नपुंसकता, कमजोरी और अपमान से अवगत कराएगी। अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿قُلْ أَرَءَيْتَكُمْ إِنْ أَتَىٰكُمْ عَذَابُ ٱللَّهِ أَوْ أَتَتْكُمُ ٱلسَّاعَةُ أَغَيْرَ ٱللَّهِ تَدْعُونَ إِن كُنتُمْ
صَٰدِقِينَ بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُونَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُونَ إِلَيْهِ إِن شَآءَ وَتَنسَوْنَ مَا تُشْرِكُونَ﴾

कहो, "क्या तुमने यह भी सोचा कि यदि तुमपर अल्लाह की यातना आ पड़े या वह घड़ी (क़यामत) तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे? बोलो, यदि तुम सच्चे हो? बल्कि तुम उसी को पुकारते हो – फिर जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो, वह चाहता है तो उसे दूर भी कर देता है – और उन्हें भूल जाते हो जिन्हें साझीदार ठहराते हो।" (अल-अनआम:४०-४१)

जो कोई साम्राज्य के साथ अल्लाह की विशिष्टता और सृष्टि से उसकी

बेनियाज़ी (अत्यन्त निस्पृह होने) को जानता है; वह किसी और से लाभ प्राप्त करने से निराश हो जाता है, और किसी अन्य से उसकी आशा कट जाती है।

﴿قُلِ ٱدۡعُواْ ٱلَّذِينَ زَعَمۡتُم مِّن دُونِ ٱللَّهِ لَا يَمۡلِكُونَ مِثۡقَالَ ذَرَّةٖ فِي ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَلَا فِي ٱلۡأَرۡضِ وَمَا لَهُمۡ فِيهِمَا مِن شِرۡكٖ وَمَا لَهُۥ مِنۡهُم مِّن ظَهِيرٖ﴾

(कह दो, "अल्लाह को छोड़कर जिनका तुम्हें (उपास्य होने का) दावा है, उन्हें पुकार कर देखो। वे न आकाशों में कणभर चीज़ के मालिक हैं और न धरती में और न उन दोनों में उनका कोई साझा है और न उनमें से कोई उसका सहायक है।" (सबा: २२)

अल्लाह के सिवा किसी को पुकारने वाले के साथ मोत के समय किया होता है ?

अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा करने वाले को जब म्रत्यु आती है तो वो अपने कार्यों से दामन झाड़ने लगता है,

﴿ٱلَّذِينَ تَتَوَفَّىٰهُمُ ٱلْمَلَـٰٓئِكَةُ ظَالِمِىٓ أَنفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقَوُا۟ ٱلسَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِن سُوٓءٍ ۚ﴾

जिनकी रूहों को फ़रिश्ते इस दशा में ग्रस्त करते हैं कि वे अपने आप पर अत्याचार कर रहे होते हैं, तब वे आज्ञाकारी एवं वशीभूत होकर आ झुकते हैं (और कहते हैं) "हम तो कोई बुराई नहीं करते थे। (अन-नह्ल:२८)

क़यामत के दिन हर इंसान की आँखों से पर्दा हट जाएगा, वह सृष्टि की नपुंसकता को निश्चय की आँख से देख लेगा और ये भी देख लेगा की जिनको वो पुकारता था वो उससे पल्ला झाड़ रहे हैं। अल्लाह पाक फ़रमाता है:

﴿حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ قَالُوٓا۟ أَيْنَ مَا كُنتُمْ تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ ۖ
قَالُوا۟ ضَلُّوا۟ عَنَّا وَشَهِدُوا۟ عَلَىٰٓ أَنفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوا۟ كَـٰفِرِينَ﴾

यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) उनके प्राण ग्रस्त करने के लिए उनके पास आएँगे तो कहेंगे, "कहाँ हैं, वे जिन्हें तुम अल्लाह को

छोड़कर पुकारते थे?" कहेंगे, "वे तो हमसे गुम हो गए (अल-आराफ़: ३७)

अर्थात: उन्होंने हमें छोड़ दिया, अब हमको उनसे किसी हानी या लाभ की अपेक्षा नहीं।

जो अल्लाह के अलावा किसी और को पुकारेगा अल्लाह उसपर क्रोधित होगा और उसे सदा के लिए आग में डाल देगा। अल्लाह के रसूल ﷺ ने फरमाया: "जो अल्लाह के अलावा किसी अन्य की प्रार्थना करते हुए मर जाता है वह नर्क में प्रवेश करेगा।" (सही बुखारी, सही मुस्लिम)[1]

(1) सही बुखारी, संख्या (४४९७), सही मुस्लिम, (९२) अब्दुल्लाह बिन मसूद (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की हदीस।

अल्लाह के सिवा दूसरों से प्रार्थना करना शेतान को प्रये है

प्रार्थना एक प्रिय पूजा है जिससे एकेश्वरवादी दूसरों से अलग दिखाई देता है, और यह शैतान के लिए बंदों का धर्म भ्रष्ट करने के सबसे सरल रास्तों में से एक है। इमाम इब्ने कय्यिम (अल्लाह उन पर दया करे) ने कहा: " मरे हुओं से जरूरतें पूरी करने की दुआ करना, उनसे मदद मांगना और उनकी ओर ध्यान लगाना दुन्या के बहुदेववाद की जड़ है"।(1)

और मुसलमान अपने दिल, इबादत और अपने व्यवहार को केवल अपने रब की और एकत्र करता है और अपने ज्ञान, उद्देश्य, इच्छा और प्रेम में स्रष्टा और स्रष्टी के बीच अंतर करता है, इसलिए वह उनमें से प्रत्येक का अधिकार और उसके रुतबे को जानता है, और किसी एक का अधिकार किसी दूसरे को नहीं देता, तो इबादत (वंदना), दुआ (प्रार्थना), डर और आशा रब का हक है, जबकि प्रेम, अनुसरण, इज़्ज़त की रक्षा और तारीफ करना नेक बंदों का हक़ है।

में शैतान मरदूद से अल्लाह की शरण लेता हूँ:

﴿فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتَ ٱللَّهِ ٱلَّتِى فَطَرَ ٱلنَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ
لِخَلْقِ ٱللَّهِ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾

(1) मदारीजुस्सालिकीन (१/३५३)।

अतः एक ओर का होकर अपने रुख़ को 'दीन' (धर्म) की ओर जमा दो, अल्लाह की उस प्रकृति का अनुसरण करो जिसपर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई संरचना बदली नहीं जा सकती। यही सीधा और ठीक धर्म है, किन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। (अर-रूम: ३०)

अल्लाह मुझे और आप सब को बरकत दे।

एकेश्वरवाद एक व्यक्ति के पास सबसे कीमती चीज है

सबसे कीमती चीज जो बंदे को दी गई है, वह अल्लाह की तोहीद (सिर्फ उसी को पूज्य मानना/ऐकीश्वरवाद) है, और सबसे बड़ा वरदान रब से मिलने (मरते दम) तक उस पर डटे रेहना है, थोड़ी सी भी तोहीद, अगर सही हो, आग में सदा रहने से मुक्ति दिलाती है, और सम्पूर्ण तोहीद आग में प्रवेश करने से बचाती है, और शैतान के पास चालें और संदेह हैं जिनके द्वारा वह बंदों को उनके धर्म से दूर करता है, जो संदेह भी बंदे को पैश आता है शैतान ज़रूर उसके अनुसरण पर प्रेरित करता है और उसपर विश्वास की और बुलाता है, तो जो कोई सुरक्षा चाहता है, वह कुरान को पढ़कर, उस पर चिंतन करके और ज्ञान प्राप्त करके, अपनी तोहीद और ईमान की समीक्षा करता रहे और खुद को शक के क्षेत्रों से दूर रखे।

हम अल्लाह से लाभदायक ज्ञान, अच्छे कार्य और अल्लाह के लिए खालिस प्रार्थना मांगते हैं, अल्लाह हमारे नबी मुहम्मद पर अपनी शांति और क्रपा करे और आप की संतान और अनुयायियों पर।

अंतर्वस्तु

अल्लाह के नाम से जो बड़ा दयालु और क्रपालु है प्रस्तावना 5
काम को अल्लाह के लिए खालिस करना ही इस्लाम धर्म की हकीकत है 7
इस्लाम धर्म सिर्फ अल्लाह से प्रार्थना करने पर आधारित है 9
सिर्फ अल्लाह से प्रार्थना करने से मुंह मोड़ने वाले की सज़ा.......................... 11
दुआ ही इबादत है... 12
सिर्फ अल्लाह को पुकारने का महत्व 13
सिर्फ अल्लाह को पुकारना ईमान की निशानी है 15
अकेला अल्लाह ही दुआओं को सुन्ने वाला है 16
सारे नबी अकेले अल्लाह को पुकारते थे.. 19
अकेले अल्लाह को पुकारने के लाभ 23
एकेश्वरवादी व्यक्ति की कुछ निशानियाँ.. 24
रसूलों ने किसी से नहीं कहा कि वो उन्हें पुकारें 25
धरती पर होने वाला सब से बड़ा पाप अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारना है 27
मुर्दे पुकारने वालों को नहीं सुनते 30
मुर्दे को पुकारने वाला जानता है कि वो सुन नहीं सकता और लाभ भी नहीं दे सकता 32
मुर्दे को पुकारने से थकान और धर्म भ्रष्ट होने के सिवा कुछ नहीं मिलता 33
जो किसी मुसीबत में अल्लाह के सिवा किसी को पुकारता है अल्लाह उसे उससे

सख्त मुसीबत में डालता है... 34
अल्लाह के सिवा किसी को पुकारने वाले के साथ मोत के समय किया होता है? 36
अल्लाह के सिवा दूसरों से प्रार्थना करना शेतान को प्रये है........................... 38
एकेश्वरवाद एक व्यक्ति के पास सबसे कीमती चीज है................................. 40

मुअस्ससा तलिबिल-इल्म

लिन्नशर वत्तउज़ी

00966506090448

इस पुस्तक में पढ़ें:

- ❖ दुआ (प्रार्थना) एक महान इबादत है, हर मुसलमान के लिए महत्वपूर्ण है और इसमें शुद्धता बंदे की तौहीद (एकेश्वरवाद) को दर्शाती है।
- ❖ अल्लाह तआला उन बंदों से प्यार करता है जो हर समय उससे दुआ करते हैं और उन लोगों से नफरत करता है जो दूसरों से दुआ (प्रार्थना) करते हैं।
- ❖ एक अल्लाह से दुआ (प्रार्थना) करना पैग़म्बरों (ईशदूतों) की पद्धति और अल्लाह के मित्रों का मार्ग है।
- ❖ अल्लाह के सिवा ज़िन्दा और मुर्दा दोनों से दुआ करना अल्लाह के यहाँ शिर्क है और इससे दुआ करने वाला कोई लाभ नहीं प्राप्त कर सकता।
- ❖ धरती पर सबसे बड़ा गुनाह अल्लाह के अलावा किसी और से दुआ करना है।
- ❖ अल्लाह का एकेश्वरवाद बंदे का सबसे बड़ी मिल्कियत है, जो प्रार्थना में ईश्वर के साथ साझी बनाए वह एकेश्वरवाद खो देता है।

مترجم بالهندية

ردمك:

مؤسسة طالب العلم للنشر والتوزيع: ٠٥٠٦٠٩٠٤٤٨